जल, जमीं का संरक्षण

रोशन बलूनी

प्यारे बचा जमीं को !

ऊँचा हिमाल जलता,
सूरज भी जल रहा है।
प्यारे! बचा जमीं को,
सूरज उबल रहा है।।
सूखी पड़ी धरा है,
सूखे सभी सरोवर।
सूखे पड़े गधेरे,
सूखे सभी समंदर।
हिमवंत जल रहा है,
मानो मचल रहा है।
ऊँचा हिमाल जलता,
सूरज भी जल रहा है।।
नदियां नहीं रहेंगी,
फसलें कहां उगेंगी,
धरणी नहीं बचेगी,
सांसें कहां बचेंगी।
संकट विनाश लेकर,
कलिकाल चल रहा है।
ऊँचा हिमाल जलता,
सूरज भी जल रहा है।।
ऊँचे पहाड़ काटे,
काटी हजार डाली।
कंक्रीट के भवन हैं,
जंगल हजार खाली।
हिमनद गल रहे हैं,
मौसम बदल रहा है।
ऊँचा हिमाल जलता,
सूरज भी जल रहा है।
बूंदें नहीं बरसतीं,
जलस्रोत खो रहे हैं।
पानी बिना बहुत से,
जल जन्तु मर रहे हैं।
रासायनिक जहर तू,
मानव! उगल रहा है।
ऊँचा हिमाल जलता,
सूरज भी जल रहा है।।
संकल्प ले अभी से,
धानी-धरा सजा ले।
द्रुमदल लगा-लगा के,
जीवन हरा बना ले।
जागे नहीं अभी तो,
अवसर निकल रहा है।
प्यारे! बचा जमीं को,
सूरज उबल रहा है।।

"पावस आया"

घुँघराले बादल हैं न्यारे।
काले कजरारे हैं सारे।।
चतुर्मास बड़ा मन भाया।
देखो! कितनी खुशियां लाया।।

रिमझिम रिमझिम बूंदें बरसीं।
ताल तलैया पूरित सरसीं।।
पुलकित है द्रुमदल की काया।
आया सावन उत्सव छाया।।

घनन घनन घन गर्जन करते।
खगकुल कलरव मन को हरते।।
हलधर देख दृश्य हर्षाया।
पौ बारह ले पावस आया।।

दर्दुर टर-टर जल में करते।
ढम ढम ढोल गगन में बजते।।
सावन, शुक्ल तीज को लाया।
हरी-भरी हरियाली लाया।।

बम-बम भोले को सब जपते।
गंगा-जल कावड़ में भरते।।
भक्तजनों का मेला आया।
आया सावन उत्सव लाया।।

संपर्क करें:
रोशन बलूनी,
नौगांवखाल,
एकेश्वर, पौड़ी गढ़वाल।
मो. 8057689418, 8859510126
ईमेलः **pranjalbaluni1980@gmail.com**